डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी.जैन कॉलेज, आरा.

Topic - बिहार में अफ़ग़ान शासन के अंतर्गत सैन्य संगठन और किलेबंदी व्यवस्था : एक विश्लेषण
(मुगल सैन्य संरचना से तुलनात्मक अध्ययन सहित)
The military organisation and fortification system under Afghan rule in Bihar : An analysis.
Was this System different from the Mughal military structure ?

Ans. - बिहार में अफ़ग़ान शासन का सुदृढ़ रूप मुख्यतः शेरशाह सूरी तथा उसके उत्तराधिकारियों के समय दिखाई देता है। सूरी वंश (1540–1555 ई.) का राजनीतिक केंद्र भले ही दिल्ली रहा हो, परंतु उसकी शक्ति का आधार बिहार ही था। बिहार अफ़ग़ानों के लिए केवल एक प्रांत नहीं बल्कि सत्ता-संगठन और सैन्य पुनर्गठन की प्रयोगशाला था। अतः बिहार के संदर्भ में अफ़ग़ान सैन्य संगठन और किलेबंदी व्यवस्था का विश्लेषण भारतीय मध्यकालीन सैन्य इतिहास को समझने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

1. अफ़ग़ान सैन्य संगठन की मूल विशेषताएँ :

(क) जनजातीय आधार पर सेना :
अफ़ग़ान शासन की सेना मूलतः जनजातीय (Tribal) आधार पर संगठित थी। अफ़ग़ान सरदार अपने-अपने क़बीलों के सैनिकों का नेतृत्व करते थे। यह व्यवस्था व्यक्तिगत निष्ठा (Personal Loyalty) पर आधारित थी, न कि पूर्णतः केंद्रीकृत नौकरशाही पर।
सरदारों की अपनी टुकड़ियाँ होती थीं
सैनिकों की भर्ती जातीय एवं कबीलाई नेटवर्क से होती थी।
व्यक्तिगत साहस और युद्धक क्षमता को अधिक महत्व
इस कारण सेना में स्वायत्तता अधिक थी, परंतु केंद्रीय नियंत्रण सीमित था।

(ख) घुड़सवार सेना (Cavalry) का महत्त्व :
अफ़ग़ान सेना में घुड़सवारों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। यह परंपरा मध्य एशियाई युद्ध पद्धति से प्रभावित थी।
तीव्र गति से आक्रमण,
छापामार शैली,
हल्की और चुस्त सेना,
शेरशाह सूरी ने घोड़ों की गुणवत्ता सुधारने के लिए दाग़ (Branding) और हुलिया पंजीकरण की व्यवस्था लागू की, जिससे सेना की विश्वसनीयता बढ़ी।

(ग) पैदल सेना और तोपखाना :
यद्यपि अफ़ग़ानों की प्रमुख शक्ति घुड़सवार सेना थी, फिर भी शेरशाह ने तोपखाने और आग्नेयास्त्रों का प्रयोग बढ़ाया।
तोपों का प्रयोग किलों की रक्षा एवं घेरेबंदी में,
बंदूकधारी पैदल सैनिकों की सीमित संख्या,
यहाँ ध्यान देने योग्य है कि अफ़ग़ान तोपखाना मुगलों जितना विकसित नहीं था।

(घ) वेतन और प्रशासनिक सुधार :
शेरशाह ने सैनिकों को नकद वेतन देने की व्यवस्था की।
जागीर आधारित अनियमित भुगतान में कमी,
सैनिकों का राज्य से सीधा संबंध,
इससे सेना में अनुशासन और निष्ठा बढ़ी।

2. बिहार में किलेबंदी व्यवस्था :

बिहार की भौगोलिक स्थिति—नदियों, पहाड़ियों और सीमावर्ती क्षेत्रों—के कारण यहाँ किलों का विशेष महत्त्व था।

(क) रोहतासगढ़ किला :

बिहार में अफ़ग़ान किलेबंदी का सर्वोत्तम उदाहरण रोहतासगढ़ किला है।
पहाड़ी पर स्थित, प्राकृतिक सुरक्षा,
विशाल परकोटे और सुदृढ़ द्वार।
जल-स्रोतों की व्यवस्था,
सैन्य चौकियों का न निर्माण,
शेरशाह ने इसे बंगाल और उत्तर भारत के बीच सामरिक केंद्र के रूप में विकसित किया।

(ख) चुनार और अन्य किले :
चुनार किला भी सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था, यद्यपि यह वर्तमान उत्तर प्रदेश में है, पर बिहार की सुरक्षा से जुड़ा था।
बिहार में छोटे-छोटे गढ़ (फोर्टिफाइड पोस्ट) भी बनाए गए जो प्रशासनिक और सैन्य चौकियों के रूप में कार्य करते थे।

(ग) किलेबंदी की विशेषताएँ :
प्राकृतिक भूगोल का उपयोग,
बहु-द्वारी प्रवेश प्रणाली,
सैनिक चौकियाँ,
आपातकालीन रसद भंडारण,
अफ़ग़ानों की किलेबंदी मुख्यतः रक्षात्मक (Defensive) प्रकृति की थी, जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय नियंत्रण और विद्रोहों का दमन था।

3. प्रशासन और सैन्य समन्वय :

अफ़ग़ान शासन में प्रशासन और सैन्य संगठन परस्पर जुड़े थे।
परगना स्तर पर सैनिक टुकड़ी,
ज़मींदारों की सैन्य जिम्मेदारी,
सीमांत क्षेत्रों में स्थायी चौकियाँ,
इससे बिहार में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने में सहायता मिली।

4. क्या यह व्यवस्था मुगल सैन्य संरचना से भिन्न थी ?

अफ़ग़ान और मुगल सैन्य संगठन की तुलना करने पर महत्वपूर्ण भिन्नताएँ सामने आती हैं -
(क) केंद्रीकरण बनाम जनजातीय संरचना :
मुगल सेना, विशेषकर अकबर के समय, अत्यंत केंद्रीकृत थी।
मनसबदारी प्रणाली,
राज्य द्वारा नियंत्रित पदानुक्रम,
सैनिकों का नियमित पंजीकरण,
इसके विपरीत अफ़ग़ान सेना कबीलाई नेतृत्व पर आधारित थी।
निष्कर्ष: मुगल व्यवस्था अधिक संगठित और नौकरशाही आधारित थी।

(ख) मनसबदारी बनाम सरदारी :
मुगलों ने मनसबदारी प्रणाली अपनाई, जिसमें सैनिक और अधिकारी दोनों राज्य के अधीन थे।
अफ़ग़ानों में सरदारों की स्वायत्तता अधिक थी, जिससे विद्रोह की संभावना भी बनी रहती थी।

(ग) तोपखाना और आग्नेयास्त्र :
मुगलों, विशेषकर बाबर ने पानीपत (1526) में तोपखाने का प्रभावी उपयोग किया।
संगठित तोपखाना विभाग,
विदेशी विशेषज्ञों की सहायता,
अफ़ग़ानों ने तोपों का उपयोग किया, परंतु वह मुगल स्तर का नहीं था।

(घ) किलेबंदी में अंतर :
मुगल किले अधिक भव्य और शहरी थे, जैसे:

आगरा किला,
लाल किला,
इनमें प्रशासनिक और आवासीय संरचना भी सम्मिलित थी।
अफ़ग़ान किले अपेक्षाकृत सैन्य और सामरिक दृष्टि से अधिक केंद्रित थे।

(ङ) सैन्य अनुशासन :
मुगल सेना में वेतन, पद और निरीक्षण की स्पष्ट व्यवस्था थी।
अफ़ग़ानों में व्यक्तिगत निष्ठा प्रधान थी।

5. समालोचनात्मक विश्लेषण :
---
(1) अफ़ग़ान व्यवस्था की शक्तियाँ :
त्वरित युद्ध क्षमता,
स्थानीय समर्थन,
सामरिक किलेबंदी।

(2) कमजोरियाँ :
केंद्रीय नियंत्रण की कमी,
सरदारों की स्वायत्तता,
दीर्घकालीन स्थिरता का अभाव।

(3) मुगल व्यवस्था की श्रेष्ठता :
प्रशासनिक केंद्रीकरण,
मनसबदारी प्रणाली,
उन्नत तोपखाना,
फिर भी यह ध्यान रखना चाहिए कि मुगलों की कई सैन्य व्यवस्थाओं की प्रेरणा शेरशाह के सुधारों से मिली।

6. निष्कर्ष :

बिहार में अफ़ग़ान शासन के अंतर्गत सैन्य संगठन और किलेबंदी व्यवस्था अत्यंत व्यावहारिक, सामरिक और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप थी।
शेरशाह सूरी ने सेना को अनुशासित बनाने, घोड़ों की गुणवत्ता सुधारने तथा किलों को सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए।
यद्यपि अफ़ग़ान सैन्य संरचना जनजातीय और आंशिक रूप से विकेंद्रीकृत थी, फिर भी उसने बिहार में राजनीतिक स्थिरता स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।
मुगल सैन्य संरचना, विशेषकर अकबर के काल में, अधिक केंद्रीकृत, नौकरशाही आधारित और तकनीकी रूप से उन्नत थी।
अतः कहा जा सकता है कि अफ़ग़ान और मुगल सैन्य संरचनाएँ प्रकृति, संगठन और तकनीकी स्तर पर भिन्न थीं, किंतु दोनों ने भारतीय मध्यकालीन सैन्य परंपरा को समृद्ध किया।